खोज को हाथोंहाथ लिया। उनकी पुस्तक अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तकों में शुमार की गयी और पॉलिंग का नाम घर-घर में आदर के साथ लिया जाने लगा। हालत यह हुई कि दवा की दुकानों में विटामिन सी की गोलियों का टोटा पड़ गया।

हर नयी वैज्ञानिक खोज पर विवादों का उठ खड़ा होना पॉलिंग के वैज्ञानिक जीवन की एक नियति सी बन गयी थी। पॉलिंग ने विटामिन थिरेपी के अमल को आगे बढ़ाते हुए जब यह निष्कर्ष निकाला कि कैंसर जैसे जानलेवा बीमारी का भी काफी हद तक सफलतापूर्वक इलाज करने में विटामिन सी काफी उपयोगी हो सकता है तो एक बार फिर बावेला उठ खड़ा हुआ। 1979 में जब इवान कैमरान के साथ मिलकर उन्होंने कैंसर और विटामिन सी पुस्तक लिखी तो एक बार फिर आधिकारिक चिकित्सकों ने इस नयी खोज को किनारे लगाने के लिए एड़ी-चोटी का पसीना एक कर दिया। उन्होंने कई "प्रयोगों" के जरिये इसे खारिज करने की कोशिश की। पॉलिंग ने इन प्रयोगों की ईमानदारी और विधि पर ही सवाल खड़े कर चुनौती दी। मुख्य धारा की मीडिया ने इस बार भी कुप्रचार अभियान में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इस बार वह और अधिक घटिया स्तर पर उतरकर विटामिन थिरेपी को नीमहकीमी नुस्खा बताया और पॉलिंग की एक सठियाये हुए एक ऐसे जीनियस के रूप में चित्रित किया जिसका दिमाग फिर गया है।

विज्ञान और तकनोलाजी के पैरों में पड़ी बेड़ियां तोड़नी ही होंगी

तमाम सत्ताधर्मी प्रतिष्ठानों और बाजार की निहित स्वार्थी शक्तियों द्वारा लीनस पॉलिंग के प्रति जो रुख अख्तियार किया गया वह न तो आश्चर्यजनक है न ही अस्वाभाविक। पूंजीवाद व्यापक जनसमुदाय और वैज्ञानिक अनुसंधान के बीच एक गहरी खाई पैदा करता है। यह वैज्ञानिकों को उत्पीड़ित जनता के जीवन से काट देता है। वैज्ञानिक अनुसन्धानों को जनता की विभिन्न जरूरतों को पूरा करने की दिशा में केन्द्रित करने के बजाय पूंजीवाद मुनाफे और युद्ध की जरूरतों के लिए विज्ञान को बंधुआ बना लेता है।

लीनस पॉलिंग ताउम्र स्थापित रूढ़ियों और निहित स्वार्थों को चुनौती देते रहे। उन्होंने जोखिम उठाने का साहस किया। वैज्ञानिक क्षेत्र के मठाधीशों द्वारा उनके निष्कर्षों को नकार देने के बाद वे सीधे जनता की अदालत में जाते थे, क्योंकि उन्हें जनता से प्यार था, उसके विवेक और न्यायप्रियता पर दृढ़ विश्वास था। एक सच्चे सत्यान्वेषी की तरह वे सच्चाई को जैसा महससू करते थे उसी रूप में लोगों के सामने ले जाने में कभी भी नहीं डिगे—चाहे नाभिकीय हथियारों के खतरों का मसला रहा हो, सामाजिक परिवर्तन की जरूरत का सवाल रहा हो या मेगाविटामिन थिरेपी की बात हो जनता के हितों के साथ उन्होंने कभी समझौता नहीं किया।

लीनस पॉलिंग का समूचा जीवन संघर्ष हमें पूंजीवाद के अन्तर्गत विज्ञान और समाज के अन्तरविरोधों को समझने और उन्हें सुलझाने के लिए हमारा मार्गदर्शन करता है। सर्वाधिक महत्वपूर्ण सूत्र जो हमें मिलता है, वह यह है कि विज्ञान और तकनोलाजी के पैरों में पड़ी बेड़ियों को तोड़ने के लिए हमें बाजार और मुनाफे पर टिके समूचे तंत्र को ध्वस्त करना होगा और एक नये उत्पादन तंत्र, राजकाज और समाज के बिलकुल नये ढांचे का निर्माण करना होगा।

●

विज्ञान बनाम पोंगापंथ

नेताओं के झूठ, घोटालों, हत्या-बलात्कार
और पुलिस फायरिंग की खबरों के बीच
अखबारों की सुर्खियों में आने लगा
एक महान वैज्ञानिक का नाम
टीवी के पर्दे पर दिखने लगीं उसकी छवियां
बरसों से व्हीलचेयर में सिमटा
उसका पंगु शरीर
लेकिन मस्तिष्क उड़ान भरता हुआ
ब्रह्माण्ड के अनंत विस्तार में
खोलता हुआ मानवीय जिज्ञासा के नये-नये द्वार
उठाता हुआ प्रश्न
और ढूंढ़ता हुआ उनके मेधावी उत्तर
मानो देता हुआ चुनौती उन शक्तियों को
जो बांध देना चाहती हैं
इंसान के शरीर को और मन को
जकड़ देना चाहती हैं उसे
वर्तमान और बीते हुए कल से.....
उसके लघु शरीर के सामने
बौनी पड़ जाती हैं विराट बाधाएं
वह जगाता है विश्वास इंसान की
और विज्ञान की ताकत में ।
कुछ भी नहीं है असम्भव
कुछ भी नहीं अलौकिक
कुछ भी नहीं है अबूझ
नहीं कुछ भी सवालों से परे
विज्ञान की मशाल लेकर इंसानियत
बढ़ती ही जायेगी अंधेरे का सीना चीरते हुए ।

लेकिन अभी तो टकराना है
पोंगापंथ के काले पर्दे से
ढहानी है अंधविश्वासों की दीवार....
महान वैज्ञानिक की तस्वीरों पर
जल्दी ही छा गये वे
जो खींच ले जाना चाहते हैं देश को सदियों पीछे
अंधी आस्था, अंधा विश्वास, अंधा उन्माद
गंजेड़ी-भंगेड़ियों के झुण्ड
'मंदिर वहीं बनायेंगे' के जुनूनी नारे
"भूकंप तो कुंभ क्षेत्र में आने वाला था
साधुओं के तप से खिसककर
गुजरात चला गया", जैसे अमृतवचन !
स्टीफन हाकिंग,
हैरान मत होना अगर कभी तुम सुनो
कि तुम्हारा व्याख्यान सुनकर लौटे
विज्ञान के प्रोफेसर ने
किसी सदाचारी-दुराचारी-बाल्टी-कड़ाही बाबा के
चरणों में लोट लगाई
और फिर पूरे बदन पर भभूत पोतकर
अपने पापों को गंगा में बहाने चला गया ।

विज्ञान और पोंगापंथ का ऐसा अद्भुत संगम
(जिसमें सरस्वती लुप्त है)
हमारी इस भारतभूमि की विशेषता है ।

(दिशा छात्र संगठन की
केन्द्रीय दीवार पत्रिका
'ज्वार' से साभार)